माच

माच या मांच मालवा का बहुचर्चित लोकनाट्य है। माच शब्द मंच और मंचन दोनों में प्रयुक्त होता है। 'मांच' शब्द संस्कृत के मंच का अपभ्रंश है। मंच निर्माण और अभिनय में शास्त्रीय पद्धति का ध्यान रखा जाता है। इसका विधान इस प्रकार है-

माच आयोजन के कुछ सप्ताह पूर्व उचित मुहूर्त में ग्राम अथवा नगर के किसी खुले एवं निश्चित स्थान पर माच-मंच का खम्भ स्थापित किया जाता है। अभिनेता एवं कार्यकर्ता एकत्र होकर अपने गुरु के कर कमलों से खम्भ की पूजा करवाते हैं। आम्रपत्र, अमर वल्लरी, धनिया, गुड़ और लाल वस्त्र पूजन सामग्री रूप में प्रयुक्त किये जाते हैं और पूजन के समय निरन्तर ढोलक वादन अनिवार्य समझा जाता है।

डॉ. श्याम परमार लिखते हैं-"मंच प्राय: दृढ़ खम्भों पर 5 फुट से लगभग 10 फुट ऊँचा बनाया जाता है। ऊपर चार बल्लियों के सहारे सफेद चादर तान दी जाती थी और उस पर रंग-बिरंगे कागजों के फूल गोंद से चिपकाये जाते हैं। मंच की लम्बाई-चौड़ाई का प्रमाण आवश्यकतानुसार घटाया-बढ़ाया जा सकता है। मंच के दोनों ओर दो-दो पाट और सामने वेदी के चार खम्भे गाड़े जाते हैं चार खम्भों के निकट 16 युवक, एक जमादार एक थानेदार और एक बादशाह बैठते हैं। मंच के एक ओर कुछ अनुभवी वृद्धगण बैठते हैं। यदि बोल में कोई मूल हुई अथवा ढोलक की थाप में त्रुटि हुई या अभिनेता के हाव-भाव में कहीं असम्बद्धता आई तो वे संकेतों द्वारा उसे सचेत कर देते हैं। माच के प्रणेता गुरु का आसन भी मंच की एक ओर होता है जिस पर और कोई नहीं बैठता। प्रकाश व्यवस्था के लिए मशालची कुछ मशालों को मंच के तीन खम्भों पर लगा कर जला देता है।

मंच पर देव स्तुति के बाद मिश्ती अभिनयात्मक ढंग से जल छिड़काव करता है फिर फरासिन फर्श बिछाने का अभिनय करती है। माच के प्रणयनकर्ता अपने हाथों में माच की लिखी हुई बहियों को लिये हुए अभिनेता के पीछे चलते हैं। वे मंच पर बही में से पंक्तियाँ बोलते हैं

Scanned by CamScanner

और अभिनेता साज पर उन्हें दोहराते हैं। माच में पात्र अपने संवाद की समाप्ति पर स्वयं हट कर एक ओर खड़े हो जाते हैं और अन्य पात्रों के आगमन के लिए मंच पर स्थान बना देते हैं।

माच के प्रवर्तक अवन्तिका निवासी बालमुकुन्द गुरु माने गए हैं जिन्होंने कुल 16 माचों की रचना की है। इनका काल 20वीं शताब्दी के आरंभ का माना जाता है। इन माचों में ढोला-मारणी, राजा अरथरी, सेठ-सेठानी, हीर-रांझा आदि बहुत प्रसिद्ध हैं। इनके 20 वर्ष पश्चात् कालूराम उस्ताद का नाम भी माच परम्परा में लिया जाता है। कालूराम उस्ताद ने स्त्री पात्रों को मंच पर उतार कर माच में नया आकर्षण आरंभ किया। इनके बाद उस्ताद के पुत्र श्री शालिग्राम ने इस परम्परा में अपना पर्याप्त योगदान दिया। माचों की कथावस्तु पौराणिक प्रेमपरक और ऐतिहासिक होती है।

माच की बहुत बड़ी विशेषता यह है कि अभिनय के समय आगन्तुक पात्र का परिचय मंच पर खड़ा पात्र पहले से ही दे देता है। संवाद पद्य-बद्ध होते हैं। रूपक, उपमा आदि अलंकारों का प्रयोग माच में पर्याप्त मात्रा में मिलता है। इनका वर्तमान रूप नहीं के बराबर व्यावसायिक है। इनके नाटकीय स्वरूप में विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है इसी कारण इनकी लोकप्रियता घटी है।

माच का अध्ययन करने पर लोक प्रतिमाओं की सृजन शक्ति और कल्पना शक्ति का अनुमान सहज ही प्राप्त हो जाता है। माच की उपलब्ध कृतियों का अध्ययन करने पर निम्नलिखित निष्कर्ष निकलते हैं-

1. **कथानक**:-'लोक' की विविध रुचि, प्रवृत्ति और परिस्थिति के अनुरूप माच साहित्य में कथानकों का वैविध्य मिलता है।

(क) **धार्मिक और पौराणिक कथानक**-लोक जीवन की धार्मिक आस्था और विश्वास की परितृप्ति हेतु माचकारों ने रामायण, महाभारत, श्रीमद्भागवत और पुराणों उपनिषदों से कथानकों को ग्रहण किया है। इन कथानकों की विशेषता है कि इनमें कहीं भी संप्रदाय विशेष का आग्रह नहीं मिलता यही कारण है कि मालवा में रहने वाला रमजान मियां और युसूफ चाचा 'भक्त प्रहलाद' और 'मोरध्वज' के खेलों में भी रुचि रखते हैं।

(ख) **प्रेमाख्यान**-मध्ययुगीन प्रेमाख्यानों का प्रभाव भी माच पर दिखाई

Scanned by CamScanner

देता है। मधुमालती, सिंहलद्वीप, कामकंदला और पुष्पसेन आदि माचों में यह प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है।

(ग) **शौर्य कथाएँ**-प्रणय के साथ शौर्य का सम्बन्ध अटूट है। माच में समाज के वीर चरित्रों के शौर्य, साहस, वीरता, संघर्ष, त्याग और उत्सर्ग की भावना के दर्शन होते हैं। वीर तेजा जी, वंदीछोड़ कोदर सिंह, वीर विक्रमादित्य आदि माच इसके प्रमाण हैं।

(घ) **सामाजिक विषय और सामयिक घटनाएँ**- माचकारों ने सामाजिक समस्याओं और सामयिक घटनाओं को अपने माचों का आधार बनाया है। डाकू समस्या पर आधारित 'दयाराम गूजर' और कृषकों की समस्या पर आधारित 'धरती को दान' माच इसके प्रमाण है।

2. **पात्र और चरित्र-चित्रण:**-माच के पात्रों के साथ जनता का नैकट्य देखते ही बनता है। पुरुष पात्रों की अपेक्षा स्त्री पात्रों की संख्या अधिक होती है। पुरुष पात्र ही स्त्री पात्रों का निर्वाह करते हैं। माच में मानव पात्रों के साथ पशुपक्षी पात्र भी उपस्थित होते हैं यथा हिरण-हिरणियाँ, मैना तोता कबूतर आदि।

3. **संवाद:**-माच के संवादों को 'बोल' कहते हैं। ये बोल गेय होते हैं। पद्यबद्ध सवांदों के माध्यम से पात्रों का परिचय प्रस्तुत किया जाता है। माच में स्वगत कथन का प्रयोग नहीं मिलता। वर्तमान समय में गद्यात्मक संवादों का समावेश भी माच में हो गया है।

4. **रस:**-माच साहित्य में छः रसों की प्रधानता है-श्रृंगार, वीर, शांत, करुण, वात्सल्य और हास्य। माच का प्रधान रस श्रृंगार है। श्रृंगार के दोनों पक्षों संयोग और वियोग का हृदयग्राही वर्णन माचों में मिलता है।

5. **भाषा:**-माच की प्रमुख भाषा मालवी है। खड़ी बोली और अरबी फारसी के शब्दों का प्रयोग भी यत्र तत्र मिल जाता है। अलंकारों का अर्थ सौन्दर्य मन को आकर्षित करता है उपमा, रूपक, अनुप्रास, यमक और श्लेष अलंकारों की छटा दर्शनीय है।

माच की नाट्यशैली और उसका साहित्य दोनों ही युग के साथ परिवर्तित होते रहे हैं। माच के दृश्य काव्य के स्थान पर श्रव्य काव्य के गुणों का समावेश बढ़ता जा रहा है। अब केवल ग्रीष्मकाल में ही नहीं अपितु वर्ष भर माच का आनंद उठाया जाता है। माच के नाट्य प्रदर्शन

Scanned by CamScanner

अब केवल मालवा के गाँवों में ही नहीं अपितु दूसरे क्षेत्रों में भी आकर्षण के केन्द्र बनते जा रहे हैं। राजधानी दिल्ली में (12 मई से 17 मई 1962) भारतीय नाट्य संघ के तत्त्वाधान में फिरोजशाह कोटला ग्राउण्ड में श्री सिद्धेश्वर सेन की मण्डली द्वारा 'राजा भरथरी' और 'वीर तेजाजी' नामक माचों का प्रदर्शन सफलतापूर्वक किया गया। इन माचों में स्त्री पात्रों की भूमिका स्त्रियों द्वारा ही निभाई गई। इसके अतिरिक्त और भी कई परिवर्तन माच में हो रहे हैं जिसके फलस्वरूप माच जन जीवन में लोकप्रिय बनता जा रहा है।

Scanned by CamScanner